115
532 (P)
H
MICROFILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1185/10121

आह्वानांक Call No.

अवाप्ति सं० Acc. No. 532

104

* बन्देमातरम् *

लाहौर की सूली

अर्थात्

सरदार भगतसिंह मस्ताना

राजगुरु---सुखदेव

भाई होकर भाई को, धोखा न देना चाहिये ।
डूब मरना चाहिये, ऐसा न करना चाहिये ॥
हे वीर बर जब नाव भारत की पड़ी मझधार है ।
देता दिखाई वीर, कोई न खेवन हार है ॥

संग्रह कर्ता तथा प्रकाशक--

पं० प्रभुनारायण मिश्र

बुकसेलर एण्ड आडर सप्लायर

स्टेशन रोड (गया)

प्रथम बार] १९३१ [मूल्य -)

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED
8-AUG. 1931

* बन्देमातरम् *

* लाहौर की सूली *

अर्थात

सरदार भगतसिंह मस्ताना

राजगुरु---सुखदेव

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
GOVT. OF INDIA
No. 532
Date 13.12.71

गजल।

हम गरीबों के गले का हार बन्देमातरम्।
छीन सकतो है नहीं सरकार बन्देमातरम् ॥
सर चढ़ोंके सर में चक्कर उस समय आता जरूर।
कान में पहुँची जहाँ झनकार बन्देमातरम् ॥
हम वही हैं जो कि होना चाहिये इस वक्त पर।
आज तो चिल्ला रहा संसार बन्देमातरम् ॥
जेल में चक्की घसीटूँ भूख से हूँ मर रहा।
उस समय भी कह रहा बेजार बन्देमातरम् ॥

मौत के मुँह पर खड़ा हूँ कह रहा जल्लाद से ।
भोंक दे सीने में अब तलवार बन्देमातरम् ॥
डाक्टरों ने नब्ज देखा सर हिलाकर कह दिया ।
हो गया इसको तो अब आज़ार बन्देमातरम् ॥
ईद, होली औ दशहरा, शबरात से भी सौगुना ।
है हमारा लाड़ला त्योहार बन्देमातरम् ॥
जालिमों का जुल्म भी काफूर सा उड़ जायगा ।
फैसला होगा सरे दरबार बन्देमातरम् ॥

गजल ।

न क्यों हो जमाने में प्यारा जवाहिर ।
चमकता हुआ है सितारा जवाहिर ॥
यह चमकेगा एक रोज संसार भर में ।
अजब है निराला सितारा जवाहिर ॥
गुलामी की जंजीर में हैं जो जकड़े ।
उन्हें बन के काटेगा आरा जवाहिर ॥
जवानी के आलम को बूढ़ों से पूछो ।
बड़ा रंग लाया हमारा जवाहिर ॥
अमीरों के आँखों में खटके न क्यों कर ।

गरीबों के दिल से है प्यारा जवाहिर ॥
हुआ राम से सब यही 'राम' की है।
फले फूले दिन दिन हमारा 'जवाहिर ॥

गाना।

सितमगर के हरसू रिसाले पड़े हैं।
गरीबों की जीने के लाले पड़े हैं॥
करें उनसे फरियाद मक़तल में कैसे।
जुबां में अजल से ही ताले पड़े हैं॥
हैं आज़ाद किसमत वो लन्दन के गोरे।
औ बन्धन में भारत में काले पड़े हैं॥
भला तय करे अपने मंजिल को कैसे।
गुलामी की जंजीर डाले पड़े हैं॥
उठी है धुवाँ जो की आहो से मेरे।
फलक के भी आँखों में जाले पड़े हैं॥
जो बहते हैं आँखों से आँसू हमारे।
वे मोती के माले उबाले पड़े हैं॥
दिखायेंगे दावर को महेशर में अपना।

ये आहों से दिल में जो जाले पड़े हैं॥
वहादर हैं लड़ते अहिंसा के रन में।
औ बुज दिल जो हैं वो निराले पड़े हैं॥
खुदा ही करे ख़ैर "शायक" जहाँ में।
के जब के सितमगर के पाले पड़े हैं॥

* गजल *

छिपा है कहाँ जाके प्यारा भगतसिंह।
किसनसिंह के आँखों का तारा भगतसिंह॥
बहुत नाम रौशन किया है जहाँ में।
कि चमका है बनकर सितारा भगतसिंह॥
तू ने भारत चमन को है सींचा लहू से।
कहाँ जा बसा होके न्यारा भगतसिंह॥
नौजवानों के हेतु हुए आप गान्धी।
रहे राष्ट्र के एक गुबारा भगतसिंह॥
किया काम बेशक है हिंसा का तू ने।
हुआ निन्दनीय यह तुम्हारा भगतसिंह॥
मगर देश हित के लिये जान दे दी।
बढ़ा शान तेरा हमारा भगतसिंह॥

बुरा हाल है देश भारत का ऐ "लाल"।
होवे जन्म तेरा दुबारा भगतसिंह॥

गजल।

हमे लाज हिन्द की बचाना पड़ेगा।
स्वतन्त्रता की साज सजाना पड़ेगा॥
जो करते प्रतिज्ञा अहिंसा व्रती बन।
उसे फिर तहे दिल निभाना पड़ेगा॥
चला करके चरखा करो मातृ सेवा।
सोए हुए को जगाना पड़ेगा॥
अगर देश हित के लिए जान जाए।
खुशी से हमें सर कटाना पड़ेगा॥

गाना।

जिधर देखता हूँ उधर तू ही तू है।
कि हर शय में जलवा तेरा हूबहू है।
मैं सुनता हूँ हर वक्त तेरी कहानी।
कि तेरा जिकर हो रहा कूबकू है॥
चमन में सरापा यह गाती कुमारी।
तेरी ही फकत रोशनी तू ही तू है॥

बिना उसके माबूब औरों को बोली।
जबाँ को सम्भालो यह क्या गुफ्तगू है॥
हर एक गुल पै बुलबुल यह कहता है खालिस
जिधर देखता हूँ उधर तू ही तू है॥

गजल।

देश भारत को जगा जायँगे मरते मरते।
पाठ हम सबको पढ़ा जायँगे मरते मरते॥
भक्त भारत के भगतसिंह हैं आला यारों।
नौजवानों को उठा जायँगे मरते मरते॥
सोते गफलत में हैं जो देश के प्यारे बच्चे।
उनको सोते से जगा जायँगे मरते मरते॥
देश द्रोही नहीं आजादी के दीवाने हैं।
देश आजाद करें दार पै चढ़ते चढ़ते॥
"चक्र" हैं धन्य वही वीर दुलारे प्यारे।
नाम ज़िन्दों लिखा जायँगे मरते मरते॥

गाना

गये लार्ड इर्विन वतन धीरे धीरे।
मिटेगा ये सारा दमन धीरे धीरे॥

कहें गान्धी बाबा ये हँस हँस के हमसे।
कि आजाद होगा वतन धीरे धीरे॥
न लो नाम हिंसा का तुम अपने मुख से।
लगाओ अहिंसा लगन धीरे धीरे॥
है दी जान अपनी 'भगत' 'गुरु' व 'सुख' ने।
मिटे इस समय के करन धीरे धीरे॥
करो काम भारत का तन, मन व धन से।
तभी होगा इनका गमन धीरे धीरे॥
लड़ो तुम न आपस में ऐ हिन्दु मुस्लिम।
कि होगा हमारा मिलन धीरे धीरे॥
जो इतराते हैं अपने बल पर ये दुश्मन।
ये उनका बल होगा हरन धीरे धीरे॥
नशा कोई हरगिज नहीं पीने पावें।
तो होवेगा इनका मरन धीरे धीरे॥
न चीजें विदेशी यहां बिकने पावें।
तो भर जाये जर से वतन धीरे धीरे॥
न घबराओ प्यारे "देहाती" ये कहते।
हरा होगा भारत चमन धीरे धीरे॥

दीवानाय वतन

आजादी का दीवाना था सरदार भगतसिंह।
फांसी पर गया झूल वो सरदार भगतसिंह॥
आलम की एक सान था मस्ताना भगतसिंह।
हम बागी का अरमान था सरदार भगतसिंह॥
लाहौर का रहने वाला था वो शेरेबबर दिल।
आजादी की थी चाह उसे सरदार भगतसिंह॥
देता था लाल परचा वो लाहौर के थानों में।
हो जावो सावधान ये कहता था भगतसिंह॥
होती थी मीटिङ्ग असम्बली में जिस दम फेका बम।
इस केश में पकड़ा गया सरदार भगतसिंह॥

* गजल *

तुम राम कहो वो रहीम कहें
दोनों की गरज अल्लाह से है।
तुम दीन कहो वो धर्म कहें,
मन्शा तो उसी की राह से है॥
तुम इश्क कहो वो प्रेम कहें,
मतलब तो उसकी चाह से है।

वह जोगी हो तुम सालिक हो,
मक़सूद दिले अगाह से है।
क्यों लड़ता है मूरख बन्दे,
यह तेरी ख़ाम ख़याली है॥
है पेड़ की जड़ तो एक वही,
हर मजहब एक एक डाली है।
बनवावो शिवाला या मसज़िद
है ईंट वहीं चूना है वही॥
मेमार वही मज़दूर वही,
मिट्टी है वही चूना है वही।
तकबीर का जो कुछ मतलब है,
नाकूस की भी मन्शा है वही॥
तुम जिनको नमाजे कहते हो,
हिन्दू के लिये पूजा है वही।
फिर लड़ने से क्या हासिल है,
ज़ीफ़हम हो तुम नादान नहीं॥
भाई पै दौड़े गुर्रा कर वो,
हो सकते इनसान नहीं।

क्या क़त्ल वो ग़ारत खूँरेज़ी,
तारीफ़ यही ईमान की है।
क्या आपस में लड़कर मरना,
तालीम यही कुरआन की है॥
इन्साफ़ करो तफ़सीर यही,
क्या वेदों के फ़रमान की है।
क्या सचमुच यह खूँखारी ही
आला खसलत इनसान की है॥
तुम ऐसे बुरे आमालों पर,
कुछ भी तो खोदा से शर्म करो।
पत्थर जो बना रक्खा है शहीद,
इस दिलको ज़रा तो नर्म करो॥

वीर भगतसिंह

हम बागी का दिलदार था सरदार भगतसिंह।
दुश्मन के लिये था खञ्जर की वो धार भगतसिंह॥
बाँका था बीर लड़ाका औ शेरे बबर दिल।
फिर हुस्न का था एक ही बाज़ार भगतसिंह॥
बीरों में बीर राजगुरु सुखदेव भी रहे।

था क्रान्ति का सच्चा सिपहसालार भगतसिंह ॥
थानों में लाल परचा बेखौफ लगाता।
पर गांधी के कहने पै हुवा लाचार भगतसिंह ॥
बम केश में पकड़ा गया हाकिम से कहा यों।
मरने को सीना खोल खड़ा तैयार भगतसिंह ॥
गोली से उड़ादो मगर फांसी न लगाओ।
फांसी से ही लाचार है सरदार भगतसिंह ॥
उन जालिमों ने शेर की फरयाद न सुनी।
कर लिया फांसी गले का हार भगतसिंह ॥

शहीदों की यादगारी

दिन खून का हमारे "प्यारे" न भूल जाना।
सूनी कब्र पै मेरे दीपक जलाते जाना ॥
ताकत हो बाजूवों में जालिम को दिखा देना।
सीने पै मेरे खूँ का दरिया बहाते जाना ॥
हम जा रहे हैं जन्नत फांसी के रस्सियों पर।
दुनियां में भगतसिंह से तुम भी कहाते आना ॥
जीतेन्द्र लाहिड़ी औ अशफाकउल्ला रौशन।
सुखदेव राजगुरू पै आंसू बहाते जाना ॥

बनकर शहीद हम तो जन्नत में जा रहे हैं।
उदू के खूँ से तुम भी तर्पण कराते जाना॥

मर्दाना भगतसिंह

ए भगतसिंह आज तू दुनियां से न्यारा हो गया।
हाय सूना अब तो यह संसार सारा हो गया॥
था महीना मार्च का तारीख थी तेईसवीं।
सात बजते ही वतन का गुल सितारा हो गया॥
राजगुरु सुखदेव भी देकर गये रंजो अलम।
हाय भारतवर्ष मेरा बे सहारा हो गया॥
एक तो दिल पर जमा था गम मुझे आजाद का।
तेरे जाते ही भगतसिंह गम दुबारा हो गया॥
अब किताबों में फकत तेरी कहानी रह गई।
दूर आंखों से मेरा वो गुल हजारा हो गया॥
आबे हस्ती पै छाई गम की यह कैसी घटा।
दूर गोदी से कि जब भारत का 'प्यारा' हो गया॥

मउगन्हि के मरद बनावे के परी।

मउगन्हि के मरद बनावे के परी।
लुगवा से धोति पहिरावे के परी॥ १॥

गांवे गांवे घुमि घुमि मउगन्हि से कहि कहि ।
उन्हनी के खूब समुझावे के परी ॥
गाँव में मिटिङ्ग सुनि घर में लुकात बाड़े ।
ओकरा के चूड़ी पहिरावे के परी ॥
आपुस में बइठी के गांधी के सिकायत करे ।
तवना के मुँहे कारिख पोते के परी ॥
गान्धी जी के चेलवा के देखि के जरत बाड़े ।
उन्हूका त भंख भँखि प्रेम करे के परी ॥
गांधी जी के भण्डा देखि थर थर कांपतारे ।
तेकरा के रण बीच लावे के परी ॥
देशवा के कामवा में बाधवा डालत बाड़े ।
उन्हूका त अन्त भँखि रोवे के परी ॥
गाँव गाँव घुमि घुमि मउगा जे मना करे ।
तवना के मोछिया मुड़ावे के परी ॥
अतना परद्रोहियन के मन में ना जोस आवे ।
उन्हनी के झूला पहिरावे के परी ॥
नामवा लिखाइ कर घर में बइठल बाड़े ।
ओकरा के टिकुली तो साटे के परी ॥

तोपवा के नाम सुनि मउगन्हि डेरात बाड़े ।
मउगिन्हि का लुगवा तर तोपे के परी ॥
ललकी पगरिया के देखिके डेरात बाड़े ।
चिरुकि के काटि जुरवा बाँधे के परी ॥
जेलवा के नाम सुनी मउगन्हि डेरात बाड़े ।
उन्होनी के कोठिला में मून्दे के परी ॥
तोहनी के जिन्दगी के लाख धिरकार बाड़े ।
चिल्लू भर पनियां में डूबे के परी ॥
घुमि घुमि कर जोरी मउगन्हि के रोज रोज ।
उन्हनि में पुरा जोश भरे के परी ॥

॥ इति ॥

Printed at the Shree Press, Benares City.

* सूचना *

आप जानते हैं कि इनके यहाँ से माल मँगाने से आपको बहुत सुबिसता होगा आज ही आपको जरूरी पुस्तकें जो मँगाना हो पोस्टकार्ड भेजें कमीशन काट कर २४ घण्टे में आपके पास हम पहुँचाने का दावा रखते हैं। मगर १) एक रुपया से कम का माल वी० पी० से नहीं भेजी जायगी। यदि जरूरत हो तो उतनाही का टिकट लिफाफा में हमारे पास भेजें और सूचीपत्र मुफ्त।

बिदेसीया नाटक १६ भाग	॥)	सात सौ परी का किस्सा	।≈)
जुलमी रावण	-)	कुँवर बीजैइ १६ भाग	१)
लज्जते हुस्न	-)	बारी जसमत नैका	॥)
लाहौर की सूली	-)	सरङ्गा गीत	॥)
भारत सुधार	-)	ढोला मरुअन	॥)
भारत वियोग	-)	सारदा बिल पूरा	-)
धातु पुष्ट की दवा	२॥)	नामरदी का रोगन	३≈)

हमारा पताः—

पं० प्रभुनारायण मिश्र

बुकसेलर एण्ड आडर सप्लायर,

स्टेसन रोड, (गया)